विभिन्न संस्कृतियाँ

विभिन्न संस्कृतियाँ श्रृंखला, भाग–4, भय ग्रस्त संस्कृति में परमेश्वर की कहानी

डॉ॰ डेविड प्लॉट

आइए हम यूहन्ना की पहली पत्री खोलें – नये नियम के अन्त में यूहन्ना की दूसरी पत्री से पूर्व। हम अपने प्रत्येक अध्ययन को आरंभ करने से पूर्व हम उन पत्रों को पढ़ते हैं जिनमें हमारे जीवनों के परिवर्तन और मनुष्यों के साथ मसीह के काम की चर्चा तथा हमारे जीवन में और अन्यों के जीवन में मसीह के काम की चर्चा निहित होती है। हम चर्चा करते आ रहे हैं कि परमेश्वर हमारे आस पास कैसे काम कर रहा है और हमें उसके सहकारी होने का सौभाग्य प्राप्त है। मैं कुछ कहानियां पढ़कर सुनाऊंगा जो दिखाती हैं कि परमेश्वर हमारे जीवनों में और इस नगर में ही सीमित नहीं हैं। वह विभिन्न स्थानों में मनुष्यों के जीवनों में काम कर रहा है।

पहला पत्र चार पृष्ठ का है परन्तु मैं उसका सारांश पढ़कर सुनाऊंगा। इस पत्र का लेखक फीनिक्स से है जो कुछ सप्ताह पूर्व हमारे साथ था। उसने हमारा यूहन्ना 5 का अध्ययन सुना था। अब वह परमेश्वर के साथ काम में हाथ बंटा रहा है।

मैं यह पत्र अपनी बरमिंगम से फीनिक्स यात्रा के मध्य वायुयान से लिख रहा हूं। मैं प्रार्थना कर रहा था कि परमेश्वर मेरे साथ किसी ऐसे मनुष्य को बैठाए जिसे उसके प्रेम की गहराई जानने की लालसा हो। वह सो गया था परन्तु नींद टूटते ही उसे प्रार्थना की और साथ बैठे व्यक्ति से वार्तालाप आरंभ किया। वह फीनिक्स में रहता था और अपने परिवार से मिलने बरमिंगम आया था। वह ग्रामीण क्लब में रसोइया था परन्तु किसी नई नौकरी की खोज में था। यद्यपि उसने अपना दिल मसीह यीशु को दे दिया था परन्तु उसे ऐसा प्रतीत होता था कि उसका मन प्रभु के साथ उचित संबन्ध में नहीं है। उसने मुझसे प्रार्थना करने की याचना की। फीनिक्स में प्रवेश करते करते मैंने उसके कंधे पर हाथ रखा और हम दोनों रोए। हमने परमेश्वर को उस प्रेम के लिए धन्यवाद दिया जो वह हमसे करता है। परमेश्वर ने हमारे अध्ययन का उपयोग उस फीनिक्सवासी के लिए किया।

दूसरी कहानी,

यह पत्र रेडियो कार्यक्रम के अनुवर्ती कार्यवाही से लिया गया है। आज सुबह काम पर जाते समय मैं रेडियो सुन रहा था और मेरी गति बढ़ गई और मुझे पुलिस ने रोक लिया। उसने पूछा, ‘‘आप जानते हैं मैंने आपको क्यों रोका?’’ वे सदा ही ऐसा प्रश्न क्यों पूछते हैं? मैंने कहा ‘‘गति सीमा पार करने के कारण।’’

उसने कहा, ''हां'' और कारण जानना चाहा। मैंने कहा, ''मैं रिक और बुब्बा का कार्यक्रम सुन रहा था।'' मैंने सोचा संभवतः इससे मुझे सहायता प्राप्त हो। मैं मुस्कराया। उसने मुझे बताया कि उसने रिक और बुब्बा का कार्यक्रम सुना है और जब वे अपनी जीवन में परमेश्वर के काम की चर्चा करते हैं तो वह घृणा से भर जाता है। मैंने अवसर का लाभ उठाया और पूछा, ''इससे आप परेशान क्यों हो जाते हैं?'' उसने कहा कि वह कुछ भी कर ले परमेश्वर उसके जीवन में काम नहीं करता है। मैंने उसे अपने कहानी और अपने अनुभव सुनाने आरंभ किए। मुझे शीघ्र ही यह बोध हुआ कि उसका मसीह के साथ व्यक्तिगत संबन्ध नहीं था। उसे यह कहने के बाद में अपनी वेन से बाहर निकला और हम पीछे की ओर गए। मुझे उसे मसीह के पास लाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सावधान खोटी थियोलाजी इसे गति सीमा का नियम तोड़ने की क्षमा कहेगी परन्तु कहने का अर्थ यह नहीं है। दिन का आरंभ कैसा रहा! मुझ पर चालान ही नहीं हुआ वरन् मैं उस व्यक्ति को मसीह के पास लाने में भी सफल हुआ। अपने विश्वास में दृढ़ रहने के लिए बुब्बा आपको धन्यवाद! इससे मुझे भी विश्वास में दृढ़ रहने और अपना विश्वास बांटने का अवसर प्राप्त हुआ।''

आप देख रहे हैं कि परमेश्वर हमें कैसे काम में लेता है। ऐसे स्थानों में जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। एक और कहानी है जो हमारे विश्वासियों के परिवार से है।

''मुझे प्रतिदिन केंसर रोगियों में सेवा का अवसर मिलता है, आज एक रोगी आया जिसे मैं अनेक वर्षों से मासिक उपचार दे रहा हूं। यह रोगी रसायनिक उपचार के लिए व्हीलचेयर पर आता है। आज वह चलकर आया। मैं अत्यधिक प्रसन्न हुआ और कहा कि परमेश्वर उसे आशीष दे रहा है कि वह स्वस्थ और बलवन्त हो रहा है। उसने कहा कि उसने जीवन में अनेक दुष्कर्म किए हैं और उसे परमेश्वर के प्रेम की आशा नहीं है। वाह! परमेश्वर का कैसा प्रावधान। मैंने उसे बताया कि परमेश्वर कैसे पाप और अपराधबोध का निवारण करता है। मैं उससे संबन्ध बनास रखूंगा और उसकी सहायता करूंगा कि वह अपने लिए परमेश्वर के प्रेम को देख पाए। मैं ने जीवन में संकट ग्रस्त लोगों के साथ्स सुसमाचार बांटने के अनेक अवसर खोए हैं परन्तु अब ऐसा नहीं करूंगा।

वह हमें उन परिस्थितियों में रखता है जिनमें हम है। इसमें उसका उद्देश्य यह है कि हमें उसके प्रयोजन में सहभागी होने का अवसर मिले। इस श्रृंखला में हम चर्चा कर रहे हैं कि सुसमाचार कैसे बांटें। हमने हमारे जीवन में मसीह के काम की कहानी सीखी। पिछले अध्ययन में हमने विभिन्न संस्कृतियों में सुसमाचार प्रचार करना सीखा। हम अन्य संस्कृतियों में सुसमाचार सुनाने पर चिन्तन कर रहे हैं। हमने उत्पत्ति 3 में पाप के तीन परिणाम देखे हैं – अपरोधबोध, भय और लज्जा। सुसमाचार इन तीनों को प्रभावित करता है। हम ने पिछले अध्ययन में अपराध और अपराधबोध के बारे में देखा। हमने देखा कि अलग–अलग संस्कृतियों में कोई प्रभाव ऊपर हैं तो कोई नीचे। हमने यह भी देखा कि पाश्चात्य संस्कृति में उचित और अनुचित,

दोष और निर्दोष का भाव कैसा व्याप्त है। सबसे कठिन हमारे लिए यह मानना है कि मैं सही हूं और आप भी सही हैं। हमें आश्चर्य होगा यह जानकर कि संसार में ऐसे लोग भी हैं जो आपके समान नहीं सोचते। यद्यपि दोषी और निर्दोष अवस्था निश्चय ही सुसमाचार का भाग है, सब संस्कृतियों में अनेक मनुष्य हैं जो भय और अधिकार के वातावरण में वास करते हैं।

इस विषय में मैं आपको विभिन्न देशों के सेवकों द्वारा दिया ब्योरा सुनाता हूं। पहला, ''जब हम उस गांव के निकट पहुच रहे थे तो हमने ढोल बजने की आवाज़े सुनी और निकट आने पर देखा कि मनुष्य नाच रहे थे और भूमि पर लौट रहे थे। एक व्यक्ति हमारे पास आया और कहने लगा कि हम आगे नहीं हा सकते। वे अपनी अर्थव्यवस्था में सुधार लाने के लिए और व्यापार बढ़ाने के लिए पावन अनुष्ठान कर रहे हैं। हमें वहां से दूर भेज दिया गया और हम सुसमाचार प्रचार नहीं कर पाए। बाद में हमें सूचना मिली कि उन्होंने आत्माओं को नरबलि चढ़ाई थी।''

इसी प्रकार एक और सेवक लिखता है, ''हम एक गांव में गए जहां वर्षा के लिए अनुष्ठान संपन्न किया जा रहा था। उन्होंने हमें आमंत्रित किया। उन्होंने एक काला सांड लाकर वर्षा की दिशा कि ओर उसका मुख करके उसे बलि किया। उनका आनन्द दर्शा रहा था कि उनकी बलि स्वीकार की गई है। उसका मांस काटकर पकाया जा रहा था और एक वृद्ध पुरुष वर्षा की आत्माओं के लिए उच्च शब्द में प्रार्थना कर रहा था। शीघ्र ही सब प्रार्थना में सहभागी हो गए। मांस खाने के बाद उनका कोलाहल नाचने में बदल गया। वे पूरी दोपहर नाचते रहे जब तक कि वर्षा न आई। वर्षा बहुत अधिक थी अतः वे शरणस्थानों में चले गए। क्या उस अनुष्ठान से वर्षा आई? ग्रामवासियों के लिए यह सत्य था। उन्हें विश्वास दिलाने का कोई और उपाय भी तो नहीं था।

हमें ऐसा लगता है कि ये प्राचीन युग की कथाएं हैं परन्तु सत्य तो यह है कि आज की लेटिन अमरीका, एशिया और अफ्रिका में आज भी ये प्रथाएं दैनिक अभ्यास हैं। ये मनुष्य ज्ञान और तर्क से अनभिज्ञ हैं जो सिखाता है कि अलौकिक कुछ नहीं है। वे आत्माओं को, देवी–देवताओं को, अपने पूर्वजों की आत्माओं को और प्रेतों को भी देखते हैं। ये आत्माएं मनुष्यों में प्रवेश करके विभिन्न कार्य करती है। वे चट्टानों, पेड़ों और पहाड़ों के माध्यम से भी काम करती है। उनके लिए प्रकृति का हर एक कृत्य आत्माओं से संबन्धित है। यदि फसल खराब हो गई या फसल नहीं आई तो देवता या आत्माएं अप्रसन्न हैं। यदि मेरे जीवन में परेशानियां हैं तो मैंने आत्माओं को अप्रसन्न किया है। यदि मैं रोगग्रस्त हूं तो मुझे आत्माओं को प्रसन्न करना है। वे प्रसन्न भी होती हैं और क्रोधित भी। अतः मुझे अनुष्ठान निभाने हैं। मैंने अपनी आंखों से देखा कि संसार में अनेक संस्कृतियों में वर्ष में समय समय पर अनुष्ठान किए जाते हैं कि देवता प्रसन्न हों और आवश्यकता पड़ने पर उनकी सहायता करें।

हम इसे अंधविश्वास कहेंगे परन्तु उनके लिए यह सच्चाई है। जिसके पास दिव्य शक्तियां हैं उसे उस समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त है। इन्हें पुजारी, ओझा कहते हैं। इन लोगों की समाज में बड़ी प्रतिष्ठा होती है। यह इन्डोनेशिया, अफ्रीका तथा लेटिन अमरीका के कुछ भागों में अस्तित्वान है। ऐसी स्थिति में सुसमाचार अपराधबोध और भय का निवारण कैसे करे या आरंभ करने को यह कहें कि सुसमाचार भय का निवारण कैसे करें? हमें यह विचित्र सा लगता है परन्तु हमारे जीवन में भी भय का अस्तित्व है जिससे हम संघर्षरत हैं।

भय केवल इन संस्कृतियों में ही नहीं, हमारे जीवन में भी है जो पाप का परिणाम है। हम में विभिन्न प्रकार के भय हैं – मकड़ियों का भय, वायुयान में उड़ने का भय, संकीर्ण स्थान का भय, दंत चिकित्सकों का भय, आराधना का भय, जनता के सामने बोलने का भय, चिड़िया के परों से गुदगुदी का भय, पाप करने का भय, सास का भय, ऊंची आवाज़ का भय आदि।

अतः आज यह सोचें कि आप किसी से नहीं डरते तो निश्चय जानिए कि आपके डरने का कोई न कोई कारण अवश्य है। अब प्रश्न यह है कि हमारा सुसमाचार भय का निवारण कैसे करें?

हम अपनी ही कहानी नहीं वरन् एक और ऐसी कहानी देखेंगे जो परमेश्वर की कहानी को अपराधबोध, भय और लज्जा से ग्रस्त संस्कृति में प्रासंगिक बनाती है। मैं चाहता हूं कि आप सुने यूहन्ना भय के बारें में क्या कहता है। यूहन्ना 11:16 हम पद 18 पर विशेष ध्यान देंगे।

''जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, उसको हम जान गए और हमें उसका विश्वास है। परमेश्वर प्रेम है, और जो प्रेम में बना रहता है वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें बना रहता है। इसी से प्रेम हममें सिद्ध हुआ किहमें न्याय के दिन हिसाब हो; क्योंकि जैसा वह है वैसे ही संसार में हम भी हैं। प्रेम से भय नहीं होता, वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर करता है, क्योंकि भय का सम्बन्ध दण्ड से होता है, और जो भय करता है वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ। हम इसलिए प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हम से प्रेम किया।''

मैं पद 18 पर ध्यान केन्द्रित करना चाहता हूं, ''प्रेम से भय नहीं होता, वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर करता है। ''भय दो प्रकार के हाते हैंः अच्छा भय जैसे परमेश्वर का भय और दूसराः बुरा भय। यूहन्ना कहता है, प्रेम से भय नहीं होता अर्थात् ''भैरव'' भीषण भय। प्रेम और भय एक साथ नहीं रह सकते। दूसरी बात जो वह कहता है, प्रेम भय से भेदा नहीं जा सकता अपितु प्रेम भय का निवारण कर देता है। आज विडम्बना यह है कि मसीह के अनुयायी भय से संघर्षरत हैं।

हम जब भय के बारे में सोचते हैं तब हमारे मन में विचार उठता है कि हम परमेश्वर के संबंध में बुरा भय नहीं रखते। संभवतः हम मनुष्यों से डरते हैं, परिस्थितियों से डरते हैं या जीवन की आनेवाली घटनाओं से डरते हैं। भय एक बड़ी समस्या नहीं है क्योंकि यदि हम वास्तव में विश्वास रखें कि जगत का परमेश्वर

हमसे प्रेम करता है तो हमें किसी का भय नहीं। इसका उदाहरण हम मरकुस रचित सुसमाचार में देखेंगे जो अध्याय 4 से चलकर अध्याय 8 के अन्त तक चार कहानियां हैं जो 10 दृष्टान्तों में निहित हैं। अतः हम मरकुस 4:35 से लेकर 5:43 तक पर ध्यान देंगे। यहां मसीह का सामर्थ्य चार रूपों में प्रकट है फिर उसका गुण जिनके आधार पर हम देखेंगे कि उसका प्रेम कैसे भयका निवारण करता है जो हमारे जीवन की वास्तविकता है। यहां एक प्रतिज्ञा है।

आइए मरकुस 4:35 से पढ़ना आरंभ करें,

''उस दिन जब सांझ हुई, तो उसने चेलों से कहा, 'आओ हम पार चलें', और वे भीड़ को छोड़कर जैसा वह था, वैसा ही उसे नाव पर साथ ले चले; और उसके साथ और भी नावें थीं। तब बड़ी आंधी आई, और लहरें नाव पर यहां तक लगीं कि वह पानी से भरी जाती थी। पर वह आप पिछले भाग में गद्दी पर सो रहा था। तब उन्होंने उसे जगाकर उससे कहा, 'हे गुरु, क्या तुझे चिन्ता नहीं कि हम नष्ट हुए जाते हैं? तब उसने उठकर आंधी को डांटा, और पानी से कहा, 'शान्त हो, थम जा!' और आंधी थम गई और बड़ा चैन हो गया, और उनसे कहा, 'तुम क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं?' वे बहुत ही डर गए और आपस में बोले, 'यह कौन है कि आंधी पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं?'''

दृश्य यह है शिष्य यीशु की आज्ञा मानकर उसे नाव में झील के पार ले जा रहे हैं। अकस्मात ही प्रचण्ड आंधी उठती है और उनकी नाव डूबने पर है। सृष्टिकर्ता सो रहा है।

यह बड़ी विचित्र बात है। एक ही स्थान है जहां यीशु के सोने का उल्लेख है और वह भी आंधी के बीच। शिष्य विमूढ़ हैं कि ऐसी स्थिति में उसका गुरु लापरवाही सो रहा है। वे उसे जगाते हैं। यीशु उठकर आंधी से कहता है, अपना मुंह बांध। सब कुछ शान्त हो जाता है। शिष्य अत्यधिक भयभीत थे। पद 41 में फिर भय शब्द आया है परन्तु यह भय अच्छा भय है। उनके भय का कारण आंधी–तूफान नहीं, उनके मध्य सृष्टिकर्ता की उपस्थिति थी। उनके लिए यह विश्वास का पाठ था कि परिस्थिति कैसी भी संकटकालीन हो परमेश्वर उनके मध्य था और वह लापरवाह नहीं था, चाहे सो रहा है। इस संदर्भ पर मैंने अनेक उपदेश सुने हैं कि मसीह के साथ आप जीवन की आंधियों का सामना कर सकते हैं। मसीह में विश्वास रखने से आपके जीवन के आंधी–तूफान समाप्त हो जाएंगे। परन्तु मरकुस का उद्देश्य यह सिखाना नहीं है।

स्मरण रखें कि मरकुस उत्पीड़ित विश्वासियों के लिए लिख रहा है जो विश्वास के कारण सताए जा रहे थे। उनके मन में यह विचार उठने लगा कि मसीह को उनकी चिन्ता नहीं है। उसने उनका साथ छोड़ दिया है। अतः मरकुस उन्हें विश्वास रखना सिखा रहा है – इसे न भूलें। परिस्थितियां कैसी भी विषम हों परमेश्वर उनके मध्य में ही है। वह कहता है, ''तुम अकेले नहीं हो।'' कभी न भूलें।

मैं यह नही कहता कि मसीह पर विश्वास के कारण आप दुःख, कष्ट और संघर्षो से मुक्त हो जाएंगे। मसीह में विश्वास रखने से आपके कष्ट एवं परेशानियां समाप्त हो जाएंगे। परन्तु मैं यह विश्वास दिला सकता हूं कि गलील सागर की आंधी थमाने वाला परमेश्वर ब्रह्मांड के प्रत्येक कण को यथास्थान थामे रहता है। उसने हमें प्रतिज्ञा दी है कि वह युगानयुग हमारे साथ रहेगा। यह न भूलें कि परमेश्वर का सामर्थ्य आंधी रोकने में नहीं आंधी से पार लगाने में है। ध्यान रखें कि इसी यीशु ने क्रूस का दुःख और कष्ट सहा था कि हम उद्धार पाएं।

वह कहता है, मैं तुम्हारे कष्टों से अपरिचित नहीं हूं। मैं तुम्हारी कल्पना से अधिक दुःखों से परिचित हूं। जब तुम कष्टों से होकर आगे बढ़ते हो, मैं तुम्हारे साथ हूं। तुम अकेले नहीं हो। अब हमारी दूसरी कहानी आती है, मरकुस 5:1–20.

''वे झील के पार गिरासेनियों के देश में पहुंचे, जब वह नाव पर से उतरा तो तुरन्त एक मनुष्य जिसमें अशुद्ध आत्मा थी, कब्रों से निकलकर उनसे मिला। वह कबों में रहा करता था और कोई उसे सांकलों से भी न बांध सकता था, क्योंकि वह बार–बार बेड़ियों और सांकलों से बांधा गया था, पर उसने सांकलों को तोड़ दिया और बेड़ियों को टुकड़े–टुकड़े कर दिए थे, और कोई उसे वशमें नहीं कर सकता था। वह लगातार रात–दिन कब्रों और पहाड़ों में चिल्लाता, और अपने को पत्थरों से घायल करता था। वह यीशु को दूर ही से देखकर दौड़ा, उसे प्रणाम किया, और ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहा, 'हे यीशु परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र, तुझे मुझ से क्या काम? मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूं कि मुझे पीड़ा न दें।' क्योंकि उसने उससे कहा था, 'हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल आ।' उसने उससे पूछा, 'तेरा नाम क्या है?' उसने उससे कहा, 'मेरा नाम सेना है; क्योंकि हम बहुत हैं।' और उसने उससे बहुत बिनती की, 'हमें इस देश से बाहर न भेज।' वहां पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था। उसने उनसे बिनती करके कहा, 'हमें उन सूअरों में भेज दे कि हम उनके भीतर जाएं।' अतः उसने उन्हें आज्ञा दी औश्र अशुद्ध आत्मा निकल कर सूअरों के भीतर बैठ गईं और झुण्ड जो कोई दो हज़ार का था, कड़ाड़े पर से झपटकर झील में जा पड़ा और डूब मरा। उनके चरवाहों ने भागकर नगर और गांवों में समाचार सुनाया, और जो हुआ था, लोग उसे देखने आए। यीशु के पास आकर वे उसको जिसमें दुष्ट आत्माएं थीं, अर्थात् जिसमें सेना समाई थी, कपड़े पहिने और सचेत बैठे देखकर डर गए। देखने वालों ने उसका, जिसमें दुष्टात्माएं थीं, और सूअरों का पूरा हाल उनको कह सुनाया। तब वे उससे बिनती करके कहने लगे कि हमारी सीमा से चला जा। जब नाव पर चढ़ने लगा तो वह जिसमें पहले दुष्टात्माएं थीं, उसे बिनती करने लगा, 'मुझे अपने साथ रहने दे।' परन्तु उसने उसे आज्ञा न दी और उससे कहा, अपने घर जाकर अपने लोगों को बता कि तुम पर दया करके प्रभु ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए हैं।' वह जाकर दिकापुलिस में इस बात का प्रचार करने लगा कि यीशु ने मेरे लिए कैसे बड़े काम किए, और सब लोग अचम्भा करते थे।''

यह कहानी हमें असत्य सी प्रतीत होती है परन्तु आज भी ऐसी संस्कृतियां हैं जहां यह सब वास्तव में होता है। यहां यीशु का अधिकार देखिए – दुष्टात्माएं उसकी आज्ञा मानती हैं। यीशु को प्रकृति पर अधिकार है, उसे दुष्टात्माओं पर अधिकार है। अति सुन्दर! शैतान और उसके दूत परमेश्वर से घृणा करते हैं परन्तु उसकी उपस्थिति में वे मुंह के बल ही गिरते हैं और घोषणा करते हैं कि यीशु परमप्रधान परमेश्वर का पुत्रा है।

आपने ध्यान दिया कि यीशु ने उन्हें सूअरों में प्रवेश करने की अनुमति दे दी। वह यीशु की अनुमति के बिना कुछ नहीं कर पाते। यीशु की वरिष्ठता! जैसे यीशु की उपस्थिति पिछली कहानी में परिस्थिति के ऊपर थी उसी प्रकार इस कहानी में मसीह की शान्ति सर्वोपरि है। (पद 3,4) उस पुरुष की कोई सहायता नहीं कर पाया था। उसे ज़ंजीरों से बान्धा जाता था परन्तु यह उन्हें तोड़ देता था।

अब अपने को उस युवक के स्थान में रखकर देखें। उसका सब कुछ समाप्त हो गया था। वह निराश था। उसके संबन्धि नहीं थे, उसका कोई मित्र नहीं था। उसमें सभ्यता भी नहीं रही थी। वह नंगा रहता था, कब्रों में वास करता था। वह अपने आपको घायल कर लेता था। उसके जीवन का कोई उद्देश्य नहीं था। पद 15– लोग उसे कपड़े पहने और सचेत देखकर डर गए। यीशु के साक्षातकार ने सब कुछ बदल दिया था। यीशु के शब्दों से ही आंधी में शान्ति आई और उसके शब्दों से ही यहां इस मनुष्य के विचलित जीवन में शान्ति आई।

मैं चाहता हूं कि आप यहां बाइबल की प्रतिज्ञा पर ध्यान दें, ''सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है।'' यीशु ने कहा, ''तुम अकेले नहीं हो, तुम मुझमें सुरक्षित हो।'' अर्थात् मसीह की अनुमति के बिना बैरी कुछ नहीं कर सकता।'' इसका अर्थ यह नहीं कि कोई अनिष्ठ नहीं होगा परन्तु यह कि संघर्षों से राहत मिलेगी। हमारी मानसिकता यह है कि हम शैतान को वास्तविकता से अधिक महत्त्व देते हैं। वह स्वतंत्र नहीं है। बाइबल उसे संसार का शासक तो कहती है परन्तु वह राजाओं का राजा नहीं है। यीशु को उस पर पूरा अधिकार है इसलिए अपनी सन्तान से कहता है, ''मैंने तुम्हारे मन में, प्राण में और आत्मा में जो उत्तराधिकार तुम्हें दिया है उसे शैतान कभी नहीं छीन सकता। तुम पूर्णरूपेण सुरक्षित हो – मुझ में सुरक्षित हो।'' अब हम में से कुछ सोच रहे होंगे, ''डेव, आप भी इन अलौकिक बातों में व्यस्त हो गए। आपने क्या अंधविश्वास और तर्क के बारे में नहीं सुना? ये आलौकिक बातें हमारी कल्पनाएं हैं।''

मैं आपको बताना चाहता हूं कि बाइबल हमारे युद्ध के बारे में कहती है कि वह मांस से नहीं, स्वार्गिक क्षेत्रों में अधिकारों और प्रधानताओं से है। मेरे पास आपके लिए शुभ सन्देश है। यीशु को उन सब पर अधिकार है। अतः हम सुरक्षित हैं। उस युवक के मन में मसीह की शान्ति प्रवेश कर गई थी जिसके कारण उसका भय चला गया था।

अगली कहानी पद 21 से है। इस वृत्तान्त के बीच में एक और घटना आ गई है अतः हमें अध्याय को पूरा नहीं पढ़ना होगा 5:21—43।

आइए हम पहले इस बीच वाली कहानी पर मनन करें। यहां एक स्त्री है जो 12 वर्षों से अपने रोग से रक्त स्राव से पीड़ित है। यीशु भीड़ के मध्य है। यह स्त्री मन मे विश्वास लिए हुए है कि यीशु के वस्त्र के स्पर्शमात्र से ही वह रोग मुक्त हो जाएगी। वह किसी प्रकार उसके वस्त्र का स्पर्श करके पीछे हट जाती है। वह चकित है। उसका रोग जाता रहा। यहां ध्यान देंः यीशु को प्रकृति पर अधिकार है, यीशु को दुष्टात्मा पर अधिकार है यीशु को रोगों पर अधिकार है। यह कहानी का अन्त नहीं है। यीशु ने पूछा, ''मुझे किसने छुआ?'' शिष्य आश्चर्य से कहने लगे, ''पूरी भीड़ तुझ पर गिरी जाती है और तू पूछता है, किसने मुझे छुआ?'' ''किसी ने तो मुझे छुआ है क्योंकि मुझ में से सामर्थ्य का प्रवाह हुआ है?'' वह स्त्री डरती हुई उसके चरणों में गिर पड़ती है। मैं चाहता हूं कि आप यीशु की चंगाई को सर्वांगीणता में देखें। वह स्त्री 12 वर्षों से परेशान थी। उसने अपना सब कुछ डॉक्टरों पर लुटा दिया था परन्तु उसे कोई लाभ नहीं हुआ। लूका यह नहीं लिखता है क्योंकि वह स्वयं एक डाक्टर था और वह डाक्टरों की बुराई नहीं करना चाहता था। यह स्त्री सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में बहिष्कृत थी क्योंकि रक्तस्राव के कारण वह अशुद्ध थी। मनुष्य उसे अपने पास नहीं आने देते थे कि वे भी अशुद्ध न हो जाए। वह साहस करके छिपती हुई आती है कि यीशु को स्पर्श मात्र कर ले परन्तु यीशु तुरन्त रुक कर पूछता है, ''मुझे किसने छुआ?'' वह कांपती हुई सामने आती है परन्तु यीशु कहता है, ''तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया।''

यहां यह चंगाई मात्र शारीरिक अवस्था की नहीं है। यहां एक शब्द है जो नये नियम में हमारे उद्धार और मुक्ति से संबन्धित है। यीशु ने उससे कहा, ''कुशल से जा'' अर्थात् 'शालोम'' जिसका अर्थ है ''शान्ति''— परमेश्वर के साथ सही संबन्ध। उसका संपूर्ण जीवन परिवर्तित हो गया था। उसे सर्वांगीणता प्राप्त हो गई थी। हमने पिछले अध्ययन में भी देखा था कि यीशु ने लकवे के रोगी के पाप क्षमा कर उसे सर्वांगीणता प्रदान की थी। पापों की क्षमा उसकी मुख्य समस्या का समाधान था। इस स्त्री को भी सर्वांगीणता प्राप्त हुई। यहां सृष्टिकर्ता भीड़ के मध्य चला जा रहा है और एक समाज से बहिष्कृत स्त्री उसके वस्त्र का स्पर्श करती है और तुरन्त सृष्टिकर्ता उस पर ध्यान देता है, ''तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया।'' यहां देखिए, प्रेम ही तो है जो भय का निवारण कर रहा है। वह आपको भी सर्वांगीण बनाना चाहता है, चूकें नहीं। वह आपको अपनी शान्ति देना चाहता है और आपको चंगाई देना चाहता है।

क्या यह केवल रोग से चंगाई है? हो सकता है और नहीं भी हो सकता है। यह वास्तव में संपूर्ण उद्धार है जो रोग मुक्ति से कहीं बढ़कर है जो संसार से हमें प्राप्त है। ''मैं तुम्हारी चिन्ता करता हूं।'' ''तुम कष्टों से मुक्त हो।'' कहने का तात्पर्य क्या है? यह आगे की कहानी में है। यीशु आराधनालय के सरदार के घर जा

रहा है। वह अत्यधिक विचलित है, ''मेरी सहायता कर, यीशु।'' यीशु घर में प्रवेश करके कहता है, ''वह सोती है।'' उपस्थित गण उस पर हंसने लगे। यीशु ने उसका हाथ पकड़ कर कहा, ''तलीता कूमी।'' वह तुरन्त उठकर खड़ी हो गई।

यीशु को प्रकृति पर अधिकार है, उसे दुष्टात्माओं पर अधिकार है, उसे रोगों पर अधिकार है और उसे दुष्टात्माओं पर अधिकार है और उसे मृत्यु पर अधिकार है। यहां मैं चाहता हूं कि आप मसीह में आशा को अन्तर्ग्रहण करें।

यीशु याईर के घर के लिए प्रस्थान करता है तभी एक घटना उन्हें रोक लेती है। रक्तस्राव से पीड़ित एक स्त्री उसका स्पर्श करके चंगाई पाती है। उन्हें विलम्ब हो जाता है। तभी याईर का सेवक आकर सन्देश देता है कि उसकी पुत्री मर गई और गुरु को कष्ट देने से अब कोई लाभ नहीं। ऐसी ही कहानी यूहन्ना अध्याय 11 में लाज़र की थी। मार्था मरियम रो रही थी। यीशु भी उनके साथ रोया। वह आपके दुःख और आपके आंसू जानता है। आपकी निराशाओं से अभिज्ञ है। बाइबल में व्यक्त आशा आपकी मनोकामना आपकी अपेक्षा नहीं हैं। यीशु ने याईर को ऐसी आशा नहीं दी। बाइबल की आशा कहती है कि हमें पूर्ण विश्वास है कि ऐसा होगा। मत डर, विश्वास रख। 1 कुरिन्थियों 15:51 में लिखा है, ''हम सब नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे।'' ''हे मृत्यु, तेरी जय कहां रही? हे मृत्यु, तेरा डंक कहां रहा?'' परमेश्वर का धन्यवाद हो कि मसीह यीशु में उसने हम मृत्यु पर जय प्रदान की है। मृत्यु का डंक पाप है। मसीह अपने विश्वासियों से कहता है, ''तुम अकेले ही नहीं, मुझ में सुरक्षित हीं नहीं, मेरी देखरेख में ही नहीं, तुम अमर हो।'' मृत्यु क्षणिक है। ''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं। जो मुझमें विश्वास रखता है, वह मर भी जाए तो भी जीवित रहेगा।'' (पद 11)

मेरे मनभावन प्रचारकों में एक है डी॰एल॰ मूडी जिन्होंने अमरीका और यूरोप में प्रचार किया और अनेक आत्माएं बचाईं। उनकी युवावस्था में उन्हें अन्तिम संस्कार का सन्देश देने आमंत्रित किया गया। उन्होंने बाइबल में खोजना आरंभ किया कि यीशु का सन्देश मिल जाए परन्तु यीशु ने कहीं भी मृत्यु पर प्रचार नहीं किया वरन् उन्होंने मृतक को ही जीवित कर दिया था। उसकी वाणी सुनकर मृतक भी खड़े हो जाते थे। क्या आप चाहते हैं कि यीशु आपके अन्तिम संस्कार पर कुछ कहे? मसीह में विश्वास के कारण मरकर भी जीवित रहेंगे। यदि उसने हमारे मन से मृत्यु का भय निकाल दिया है तो फिर भय किस बात का? मनुष्य हमारा क्या बिगाड़ सकता है? प्रकृति हमें क्या हानि पहुंचा सकती है? दुष्टात्माएं हमारा क्या कर सकती हैं? रोग हमें क्या हानि पहुंचा सकते हैं? मृत्यु पराजित हो चुकी है। अतः संसार कुछ भी करे हमें भयभीत नहीं होना है? मृत्यु का वार अवर्णित है, त्रासदी पूर्ण कभी कभी परन्तु परमेश्वर ने उसका भेद प्रकट करने की प्रतिज्ञा नहीं की है।

कैसा भी रोग कैसी भी आपदा उनके हाथ में अन्तिम निर्णय नहीं है। जिसके पास प्रकृति पर, दुष्टात्माओं पर, रोगों पर, मृत्यु पर अधिकार है, उसी के पास अन्तिम निर्णय है। वह आपसे कहता है, ''तुम अकेले नहीं हो। तुम मुझ में सुरक्षित हो। मैं तुम्हारा रक्षक हूं, तुम अनन्तकाल तक जीवित रहोगे। अतः मेरे प्रेम को तुम्हारे भय का निवारण करने दो।'' भय स्वर्ग से नहीं है। भय मसीही जीवन का भाग नहीं है।

आइए हम प्रार्थना करें। हे परमेश्वर, तेरे उद्धार के लिए भय पर अधिकार देने के लिए हम तेरी स्तुति करते हैं। प्रभु, मैं प्रार्थना करता हूं कि तेरा सुसमाचार, तेरी कहानी, तेरा अधिकार, मसीह के गुण और उसकी प्रतिज्ञाएं सब यथार्थरूप में हों। ये सत्य हमारे मन—मस्तिष्क में बसे हों और तू हमें सब भय से उभार ले। मैं उनके लिए भी प्रार्थना करता हूं जिन्होंने तुझ पर कभी विश्वास नहीं किया, उनके पाप क्षमा कर। तू ही है जिसने पाप पर, मृत्यु पर और कब्र पर विजय पाई है। मैं प्रार्थना करता हूं कि वे आज हम लोगों में वास्तविकता बन जाएं। यीशु के नाम में, आमीन!